



Sanvahak (संवाहक)

An International Peer Reviewed, Refereed, Indexed, Multidisciplinary (All Discipline/Subjects), Multilingual (All Languages) & Quarterly Research journal

ISSN : 3108-1347 (Online)

IIFS Impact Factor-5.25

Vol.-2; Issue-3 (July-Sept.) 2026

Page No.- 59-61

©2026 Sanvahak

<https://sanvahak.gyanvividha.com>

Author's:

डॉ. अविनाश चन्द्र शुक्ल

प्राचार्य, श्री पंचायती संस्कृत स्नातकोत्तर
महाविद्यालय मुण्डेरवा, बस्ती.

Corresponding Author :

डॉ. अविनाश चन्द्र शुक्ल

प्राचार्य, श्री पंचायती संस्कृत स्नातकोत्तर
महाविद्यालय मुण्डेरवा, बस्ती.

लोक आस्था और लोक कथाओं की महत्ता नाथ पंथ परम्परा के परिप्रेक्ष्य में

नाथ पंथ परम्परा में लोक-आस्था केवल धार्मिक भावना नहीं, बल्कि एक जीवित सामाजिक-आध्यात्मिक चेतना है। इसकी महत्ता निम्न बिन्दुओं में स्पष्ट होती है-

1. साधना और लोकजीवन का सेतु : नाथ पंथ की विशेषता है कि वह कठिन शास्त्रीय मार्ग को लोकसुलभ बनाता है। गोरखनाथ, मच्छिन्द्रनाथ आदि सिद्धों की वाणी लोकभाषा में है, जिससे सामान्य जन भी योग, वैराग्य और आत्मानुशासन को समझ सका। लोक-आस्था ने साधना को जीवनचर्या बना दिया।

2. चमत्कार, करुणा और विश्वास : नाथ योगियों से जुड़ी लोककथाएँ-रोग निवारण, वर्षा, संतति-प्राप्ति आदि-जनमानस में गहरे विश्वास को जन्म देती हैं। ये कथाएँ प्रतीकात्मक रूप से यह दिखाती हैं कि नाथ पंथ करुणा और लोककल्याण से जुड़ा है।

3. सामाजिक समरसता का आधार : नाथ पंथ जाति, वर्ग और कर्मकाण्डीय भेदभाव से ऊपर उठकर मानव-समता का संदेश देता है। लोक-आस्था के माध्यम से यह सन्देश ग्राम्य समाज तक पहुँचा, जिससे सामाजिक समरसता सुदृढ़ हुई।

4. लोकसंस्कृति में नाथ प्रभाव : लोकगीत, कथाएँ, मेले, मठ और धूनी-परम्परा नाथ पंथ की लोकस्वीकृति के प्रमाण हैं। गोरखपुर, गोगामेड़ी, काठियावाड़, नेपाल आदि क्षेत्रों में नाथ संत लोकदेवता के रूप में पूजित हैं-यह लोक-आस्था की व्यापकता दर्शाता है।

5. शास्त्र और अनुभव का समन्वय : नाथ परम्परा में लोक-आस्था अन्धविश्वास नहीं, बल्कि अनुभव-सिद्ध साधना पर आधारित है। यहाँ शास्त्र का सम्मान है, परन्तु प्रत्यक्ष अनुभूति को प्राथमिकता-यही कारण है कि लोक इसे आत्मसात कर सका।

6. निरन्तरता और जीवन्तता : लोक-आस्था के कारण ही नाथ पंथ आज भी जीवन्त है। समय के साथ रूप बदला, पर मूल तत्त्व-योग,

वैराग्य, सहजता-लोकविश्वास के सहारे सुरक्षित रहे।

नाथ पंथ में लोक-आस्था उसकी आत्मा है-जो दर्शन को जनजीवन से जोड़ती है, साधना को व्यवहार बनाती है और परम्परा को पीढ़ियों तक जीवित रखती है। यदि आप चाहें तो इसे शोध-निबन्ध शैली।

नाथ पंथ के परिप्रेक्ष्य में लोककथाएँ केवल जनरन्जन का साधन नहीं, बल्कि परम्परा की दार्शनिक, साधनात्मक और सामाजिक चेतना की संवाहक हैं। इनकी महत्ता निम्न बिन्दुओं से स्पष्ट होती है-

1. दार्शनिक तत्त्वों का लोकभाष्य- नाथ पंथ के गूढ़ योगतत्त्व-हठयोग, कुण्डलिनी, सहज अवस्था, वैराग्य-शास्त्रीय रूप में कठिन हैं। लोककथाएँ इन्हें सरल प्रतीकों के माध्यम से प्रस्तुत करती हैं। गोरखनाथ-मच्छिन्द्रनाथ से जुड़ी कथाएँ गुरु-शिष्य परम्परा, साधना की परीक्षा और आत्मानुशासन को सहज रूप में समझाती हैं।

2. साधक-आदर्श की स्थापना- लोककथाओं में नाथ योगी आदर्श साधक के रूप में उभरते हैं-संयमी, निर्भीक, करुणामय और लोकोपकारी। इन कथाओं के माध्यम से लोक समाज में यह धारणा बनी कि साधना का उद्देश्य केवल मोक्ष नहीं, बल्कि लोककल्याण भी है।

3. चमत्कार-तत्त्व का प्रतीकात्मक अर्थ- नाथ लोककथाओं में वर्णित चमत्कार(रोगनाश, वर्षा-नियन्त्रण, मृतसंजीवनी आदि)बाह्य चमत्कार से अधिक आन्तरिक सिद्धि और आत्मबल के प्रतीक हैं। लोककथा इन्हें अनुभूति-प्रधान भाषा में व्यक्त करती है, जिससे जनविश्वास सुदृढ़ होता है।

4. सामाजिक समरसता का संवर्धन- लोककथाओं में नाथ पंथ जाति, वर्ण और कर्मकाण्डीय भेदभाव से परे दिखाई देता है। योगी राजा को उपदेश देता है, शूद्र और स्त्री को भी साधना का अधिकारी माना जाता है। इससे समाज में समता और मानवीय गरिमा की भावना पुष्ट होती है।

5. परम्परा की निरन्तरता और संरक्षण- लिखित ग्रन्थों की पहुँच सीमित रही, पर लोककथाएँ श्रुति-परम्परा से पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलीं। इसी कारण नाथ पंथ का दर्शन गाँव-गाँव तक पहुँचा और परम्परा जीवित रही।

6. लोकसंस्कृति में नाथ प्रभाव- गोगाजी, बालकनाथ, मच्छिन्द्रनाथ, गोरखनाथ आदि से जुड़ी लोककथाएँ मेले, व्रत, गीत और अनुष्ठानों में आज भी जीवन्त हैं। यह दर्शाता है कि नाथ पंथ लोककथा के माध्यम से लोकदेवता परम्परा में रूपान्तरित हुआ।

7. आध्यात्मिक अनुशासन का शिक्षण- कथाओं में गुरु की परीक्षा, शिष्य की भक्ति, अहंकार-त्याग और संयम जैसे तत्त्व बार-बार आते हैं। इस प्रकार लोककथाएँ अनौपचारिक आध्यात्मिक शिक्षा का माध्यम बनती हैं।

नाथ पंथ के सन्दर्भ में लोककथाएँ दर्शन का लोकानुवाद हैं-वे साधना को कथा बनाती हैं, योग को जीवनमूल्य में रूपान्तरित करती हैं और परम्परा को जनमानस में स्थायी स्थान देती हैं।

सन्दर्भ सूची :

1. द्विवेदी हजारी प्रसाद-नाथ सम्प्रदाय, वाराणसी:नैवेद्य निकेतन।
2. जुनेजा, वेद प्रकाश-नाथ सम्प्रदाय:साधना, साहित्य एवं सिद्धान्त, कुरुक्षेत्र:कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, 1989
3. चतुर्वेदी, परशुराम-उत्तर भारत की सन्त परम्परा, प्रयाग: किताब महल।
4. मैनी, धर्मपाल-मध्ययुगीन निर्गुण चेतना, इलाहाबाद:लोकभारती।
5. मैनी, धर्मपाल-सन्तों के धार्मिक विश्वास, नई दिल्ली:नेशनल पब्लिशिंग हाउस।
6. शुक्ल, रामचन्द्र-हिन्दी साहित्य का इतिहास, विशेषतः आदिकाल एवं नाथपंथ सम्बन्धी अध्याय।
7. नाथपंथ की लोकभाषा और साहित्यिक परम्परा के अध्ययन में उपयोगी।
8. उपाध्याय, नागेन्द्र नाथ-गोरखनाथ:नाथ सम्प्रदाय के परिप्रेक्ष्य में, सन्दर्भ ग्रन्थ।

9. क्षीरसागर, डी.बी.एवं नवलकृष्ण(सम्पा.)-राजस्थान के नाथ सम्प्रदाय और साहित्य, राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर, 1997
10. उपाध्याय, कृष्णदेव-लोक साहित्य की भूमिका। परमार, श्याम-भारतीय लोक वाङ्मय।
11. अग्रवाल, वासुदेवशरण-लोक धर्म।
12. गहलोत, नैमिचन्द्र-राजस्थानी लोक साहित्य।
13. स्वात्माराम-हठयोगप्रदीपिका, नाथ-योग परम्परा एवं साधना के अध्ययन हेतु।
14. गोरखनाथ-गोरक्षशतक, नाथ योग एवं साधना-परम्परा के मूल स्रोत के रूप में।
15. गोरखनाथ-सिद्ध-सिद्धान्त-पद्धति, नाथ दर्शन एवं आध्यात्मिक परम्परा के अध्ययन हेतु।
16. घेरण्ड-घेरण्डसंहिता, योग-साधना एवं नाथ परम्परा के सम्बन्धित अध्ययन हेतु।

•